● पढ़ो, समझो और बताओ :

६. चचा छक्कन ने चित्र टाँगा

- इम्तियाज अली ताज

रचनाएँ : प्रस्तुत कहानी में लेखक ने हास्य के माध्यम से ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया है, जो खुद ठीक से काम नहीं करते । 'वे ही सारा काम करते हैं', इसका केवल दिखावा करते हैं ।

*** किसान के दैनिक जीवनचक्र द्वारा कारक चिह्न पहचानकर वाक्य पूर्ण करो : (को, की, से, ने, !, पर , को, से)**

चचा छक्कन कभी-कभार कोई काम अपने जिम्मे क्या ले लेते हैं, घर भर को तिनगी का नाच नचा देते हैं । ये कीजो, वो कीजो । घर-बाजार एक हो जाता है । दूर क्यों जाओ, परसों की ही बात है । दुकान से चित्र का अभी चौखटा लगकर आया, उस वक्त तो वह दीवानखाने में रख दिया गया । शाम कहीं चची की नजर उसपर पड़ी तो बोलीं, "छुट्टन के अब्बा, चित्र कबसे रखा हुआ है, देखो बच्चों का घर ठहरा, कहीं टूट-फूट गया तो बैठे-बिठाए रुपये-दो-रुपये का धक्का लग जाएगा । कौन टाँगेगा इसको ?" "टाँगता और कौन ? मैं खुद टाँगूँगा। कौन-सी बड़ी बात है ! मैं अभी सब कुछ खुद ही किए लेता हूँ ।"

कहने के साथ ही शेरवानी उतार, चचा चित्र टाँगने को तैयार हो गए । ईमामी से कहा, "बीवी से दो आने पैसे लेकर कीलें ले आ ।" इधर वो दरवाजे से निकला, उधर मौदे से कहा-"मौदे, मौदे, जाना ईमानी के पीछे, कहो तीन-तीन इंच की हो कीलें । भागकर जा । जा पकड़ लो उसे रास्ते में ही ।" लीजिए, चित्र टाँगने का काम शुरू हो गया । अब आई घर भर की शामत ।

नन्हे को पुकारा-"ओ नन्हे ! जाना जरा हथौड़ा ले आना । सीढ़ी की जरूरत भी तो होगी हमको ।" "अरे भाई, लल्लू ! जरा तुम जाकर किसी से कह देते । सीढ़ी यहाँ लाकर लगा दे । और हाँ ! देखना वो लकड़ी के तख्तेवाली कुर्सी भी लेते आते तो खूब होता ।" "छुट्टन बेटे !

❑ कहानी में आए कारक शब्दों को (को, की, से, ने, हे!, पर, से, में, के) शामपट्ट पर लिखें । कारक को सरल प्रयोग द्वारा समझाएँ । उपरोक्त कृति करवाने के पश्चात विद्यार्थियों से इस प्रकार के अन्य वाक्य पाठ में से लिखवाएँ । दृढ़ीकरण होने तक अभ्यास करवाएँ ।

खोजबीन

प्रतिबंधित दवाइयों के नाम खोजकर लिखो ।

चाय पी ली? जरा जाना तो अपने उन हमसाए मीरबाकर अली के घर कहना अब्बा ने सलाम कहा है और पूछा है आपकी टाँग अब कैसी है? और कहियो वो जो है ना आपके पास, क्या नाम है उसका? ऐ लो भूल गया । पलूल था कि टलूल, न जाने क्या था? खैर वो कुछ भी था, तो यूँ कह दीजौ कि वो जो आपके पास आला है ना जिससे सीध मालूम होती है वो जरा दे दीजिए, चित्र टाँगना है । जाइयो मेरे बेटे, पर देखना सलाम जरूर करना और टाँग का पूछना न भूल जाना । अच्छा ..... ।''

''हे! ठहरे रहो । सीढ़ी पर रोशनी कौन दिखाएगा हमको? आ गया ईमामी? ले आया कीलें? मौदा मिल गया था? तीन-तीन इंच ही की है ना? बस बहुत ठीक है । ये लो सुतली मँगवाने का तो ध्यान ही नहीं रहा? अब क्या करूँ? जाना मेरे भाई जल्दी से हवा की तरह जा और देखो बस गज सवा गज हो सुतली, न बहुत मोटी हो न पतली । कह देना चित्र टाँगने के लिए चाहिए । ले आ! दद्दू मियाँ इसी वक्त सबको अपने-अपने काम की सूझी है, यूँ नहीं कि आकर जरा हाथ बँटाएँ ।''

लीजिए साहब, जैसे-तैसे चित्र टाँगने का समय आया । मगर जो होना था वही हुआ । चचा उस चित्र को उठाकर जरा वजन कर ही रहे थे कि हाथ से छूट गया । गिरकर शीशा चूर-चूर हो गया । हाय-हाय कहकर सब एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे । चचा ने अब किरचों को उठाना चाहा कि शीशा उँगली में चुभ गया, खून की धार बहने लगी, सब चित्र को भूल अपना रूमाल ढूँढ़ने लगे । रूमाल कहाँ से मिलेगा? रूमाल था शेरवानी की जेब में, शेरवानी उतारकर न जाने कहाँ रखी थी? अब जनाब घर भर ने चित्र टाँगने का सामान ताक पर रखा और शेरवानी की ढुँढ़ाई होने लगी । चचा कमरे में नाचते फिर रहे हैं । कभी इससे टकराते कभी उससे । ''सारे घर में से किसी को इतना खयाल नहीं कि मेरी तो शेरवानी ढूँढ़ निकाले और क्या, झूठ कहता हूँ कुछ? छह-छह आदमी हैं और एक शेरवानी नहीं ढूँढ़ सकते । अभी पाँच मिनट भी तो नहीं हुए, मैंने उतारकर रखी है भई?''

- इस हास्य कहानी का उचित आरोह-अवरोह एवं विराम चिह्नों सहित विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । विद्यार्थियों को कथाकथन पद्धति से व्यंग्य रचना सुनाएँ । पाठ का व्यंग्य विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहलवाएँ ।

स्वावलंबन का निर्वाह करते हुए किसी काम को करने से पूर्व कौन-कौन-सी तैयारियाँ करनी चाहिए , बताओ ।

छक्कन मियाँ बड़बड़ा उठे ।

इतने में चचा किसी जगह से बैठे-बैठे उठते हैं और देखते हैं कि शेरवानी पर ही बैठे हुए थे । अब पुकार-पुकार कर कह रहे हैं, ''अरे भाई! रहने देना, शेरवानी ढूँढ़ ली हमने, तुमको तो आँखों के सामने बैल भी खड़ा हो तो नजर नहीं आता ।'' आधे घंटे तक उँगली बँधती-बँधाती रही । नया शीशा मँगवाकर चौखटे में जड़ा और दो घंटे बाद फिर चित्र टाँगने का सिलसिला शुरू हुआ । औजार आए । सीढ़ी आई । चौकी आई । मोमबत्ती लाई गई । चचाजान सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं और सारा घर अर्धवृत्ताकार की सूरत में सहायता करने को कील-काँटे से लैस खड़ा है । दो आदमियों ने सीढ़ी पकड़ी तो चचाजान ने उस पर कदम रखा । ऊपर पहुँचे, एक ने कुर्सी पर चढ़कर कीलें बढ़ाई, एक कील ले ली, दूसरे ने हथौड़ा ऊपर पहुँचाया कि कील हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी । खिसियानी आवाज में बोले-''ऐ लो ! अब ये कील हाथ से छूटकर गिर पड़ी । देखना कहाँ गई?''

अब जनाब सबके सब घुटनों के बल टटोल-टटोल कर कील तलाश कर रहे हैं और चचा मियाँ सीढ़ी पर खड़े लगातार बड़बड़ा रहे हैं । ''मिली? अरे ढूँढ़ा? अब तक तो मैं सौ बार तलाश कर लेता । अब मैं रात भर सीढ़ी पर खड़ा-खड़ा सूख जाऊँगा । नहीं मिलती तो दूसरी ही दे दो । अंधों !'' यह सुनकर सबकी जान में जान आती है । तभी पहली कील मिल जाती है ।

अब कील चचाजान के हाथ में पहुँचाते हैं, तो मालूम पड़ा कि हथौड़ा गायब हो चुका है। ''यह हथौड़ा कहाँ चला गया?'' कहाँ रखा था मैंने? उल्लू की तरह आँखें फाड़े मेरा मुँह क्या ताक रहे हो ? छह आदमी और किसी को मालूम नहीं कि हथौड़ा मैंने कहाँ रख दिया?'' अब हथौड़ा मिला तो चचा ये भूल बैठे कि नापने के बाद कील गाड़ने को दीवार पर निशान किस जगह लगाया था । सब बारी-बारी कुर्सी पर चढ़कर कोशिश कर रहे हैं कि शायद निशान नजर आ जाए । हर एक को अलग-अलग जगह निशान दिखाई देता है । आखिर फिर पटरी ली और कोने से चित्र टाँगने की जगह को दुबारा नापना शुरू किया । चित्र कोने से पैंतीस इंच के फासले पर लगा हुआ था । ''बारह और बारह और कितने इंच और?'' बच्चों को जबानी हिसाब का सवाल मिला । ऊँची आवाज में सभी ने सवाल हल करना शुरू किया और जवाब निकला तो किसी का कुछ था और किसी का कुछ । एक ने दूसरे को गलत बताया । इसी तू-तू, मैं-मैं में सब भूल बैठे कि असल सवाल क्या था? नए सिरे से नाप लेने की जरूरत पड़ गई । चचा ने अब सुतली से नापने का इरादा बनाया और इस चक्कर में सुतली हाथ से छूट गई और चचा आ गिरे जमीन पर । कोने में सितार रखा था, उसके सारे तार चचाजान के बोझ से एकदम झनझना कर टुकड़े-टुकड़े हो गए ।

बहुत मुश्किलों के बाद चचाजान फिर से कील गाड़ने की जगह तय करते हैं । बाएँ हाथ से उस जगह कील रखते हैं और दाएँ हाथ से हथौड़ा संभालते हैं, पहली ही चोट जो पड़ती है तो सीधी हाथ के अँगूठे पर । चचा सीऽऽ सीऽऽ ... करके हथौड़ा छोड़ देते हैं, वह नीचे आ कर गिरता है किसी के पाँव पर । 'हाय-हाय ! उफ ओऽऽ' और 'मार डाला' शुरू हो जाती है ।

अब नए सिरे से कोशिश शुरू हुई । कील और आधा हथौड़ा दीवार में और चचा अचानक कील गड़ जाने से इतनी जोर से दीवार से टकराए कि नाक ही पिचक कर रह गई । कोई आधी रात का वक्त होगा, जैसे तैसे चित्र टँगा । वो भी कैसा? टेढ़ा-मेढ़ा और इतना झुका हुआ कि अब गिरा कि

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि डॉक्टर न होते तो ....

तब गिरा । चचा के सिवा बाकी सब थकान से चूर नींद में झूम रहे हैं । चचा धम्म से उतरते हैं तो कहारी गरीब के पाँव पर पाँव । वो तड़प कर चीख उठी । उसकी चीख से चचा परेशान तो हुए मगर दाढ़ी पर हाथ फेर कर बोले ''इतनी सी बात थी, लो चित्र भी लग गया, इस काम के लिए लोग मिस्तरी बुलवाया करते हैं ।''

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

दीवानखाना = बैठक का कमरा

आला = सीध नापने का यंत्र

किरच = काँच का नुकीला टुकड़ा

मुहावरे

नाच नचाना = अपने ढंग से काम कराना

शामत आना = बुरा समय आना

हाथ बँटाना = सहायता करना

तू-तू, मैं-मैं करना = बहस करना

सदैव ध्यान में रखो

समय के पालन से जीवन में अनुशासन आता है ।

अध्ययन कौशल

चचा ने किस-किस-से क्या सहायता ली, सूची बनाओ ।

विचार मंथन

।। हास्य उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक ।।

सुनो तो जरा

रेडियो/दूरदर्शन से हास्य कवि सम्मेलन सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

कुछ घरेलू औजारों के नाम बताओ ।

वाचन जगत से

हास्य की अन्य कहानी पढ़ो ।

मेरी कलम से

आला, कील और हथौड़ा का उपयोग किस-किस के लिए किया जाता है, लिखो ।

* दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो ।

१. घरभर की शामत क्यों आई ?
२. घर के सभी लोग चचा की शेरवानी कब ढूँढ़ने लगे ?
३. दीवार पर निशान ढूँढ़ने का प्रयास किस प्रकार किया गया ?
४. चित्र टँगने के बाद का दृश्य कैसा था ?
५. चचा छक्कन के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखो ।

भाषा की ओर

चित्र देखो और लिंग तथा वचन बदलकर उचित स्थान पर लिखो ।

जैसे– लड़की ← लिंग ← लड़का → वचन → लड़के

---- ← लिंग ← ---- → वचन → ----

---- ← लिंग ← ---- → वचन → ----

---- ← लिंग ← ---- → वचन → ----

---- ← लिंग ← ---- → वचन → ----

---- ← लिंग ← ---- → वचन → ----

---- ← लिंग ← ---- → वचन → ----